12

भारत में समकालीन कला आंदोलन के प्रणेता
Pioneers of Contemporary Art Movement in India

12.0 भूमिका

1857 के पश्चात अग्रजों के शासनाधीन भारत में युवा कलाकार पश्चिम की कला रीति से प्रभावित होकर पारंपरिक कला शैली को छोड़कर पश्चिमी रीति में चित्र बनाने लगे। इसी दौरान भारत में स्वाधीनता संग्राम तथा स्वदेशी आंदोलन युवा पीढ़ी को धीरे–धीरे अपनी परम्परा के बारे में सचेत करने लगे। जिस तरह से भारतवासी हर क्षेत्र से विदेशी प्रभाव को हटाने का प्रयास कर रहे थे, उसी तरह से कला क्षेत्र में **अबनिन्द्रनाथ ठाकुर** ने एक नई कला शैली से कला रसिकों को परिचित करवाया, जिसे भारतीय कला इतिहास में **बंगाल स्कूल** तथा पुनर्जागृति काल बताया गया।

पश्चिम से नई–नई कला शैलियों के आने से बंगाल स्कूल का प्रभाव धीरे–धीरे घटने लगा। यूरोप से विख्यात चित्रों की प्रतिलिपियां तथा विभिन्न तरह के सैद्धांतिक लेख तथा ग्रन्थों ने युवा कलाकारों को एक नई दिशा ढूंढने के लिए प्रेरित किया। **राजा रवि वर्मा** ने दक्षिण भारत में जिस तरह पश्चिमी तकनीक में भारतीय विषय–वस्तु का चित्रण किया, उसी तरह **अमृता शेरगिल** ने आधुनिकतम पश्चिमी तकनीकों का प्रयोग करके भारतीय विषय–वस्तु को अपनी चित्रकला में प्रयोग किया। **जामिनी राय** जैसे चित्रकार न तो पश्चिमी और न शास्त्रीय भारतीय कला से प्रभावित हुए, बल्कि इन्होंने लोक कला को एक आधुनिक रूप देकर भारतीय समकालीन कला आंदोलन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

12.1 उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन कर लेने के बाद आप

- बंगाल स्कूल के विकास का विवरण दे सकेंगे।
- पाठ में निर्धारित चित्रों के कलाकारों के नाम, शैली, आकार, माध्यम, विषयवस्तु तथा स्थान का ब्यौरा दे सकेंगे।
- पाठ में निर्धारित चित्रों के शीर्षक तथा काल का विवरण दे सकेंगे।
- बंगाल स्कूल की चित्र–शैली तथा अन्य शैलियों का अन्तर बता सकेंगे।

रावण तथा जटायू

12.2 रावण तथा जटायु

शीर्षक	–	*रावण तथा जटायू*
माध्यम	–	*तैल रंग*
शैली	–	*पाश्चात्य*
चित्रकार	–	*राजा रवि वर्मा*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

इस चित्र के चित्रकार **राजा रवि वर्मा** दक्षिण भारत के त्रावनकोर राजवंश परिवार से थे। उन्होंने तैल रंगों का प्रयोग कर नवशास्त्रीय शैली में चित्र बनाये। उन्होंने दृश्यचित्र तथा व्यक्तिचित्र, दोनों की रचना की जो जनता को बहुत पसन्द आई। **राजा रवि वर्मा** के चित्रों को ओलिओग्राफ तकनीक द्वारा भारत के कोने–कोने में पहुंचाया। आम कला रसिक पहली बार पौराणिक तथा रामायण–महाभारत की कहानियों को चित्रों में देखकर मोहित हुए।

"*रावण तथा जटायू*" रामायण की कथा का एक अंश दर्शाता है। तैल रंग द्वारा बनाये गए इस चित्र में *जटायू* को *रावण* के हाथ से *सीता* को बचाने के प्रयास को दिखाया गया है। चित्र के संयोजन में पश्चिमी प्रभाव बहुत ही स्पष्ट है जिस में गतिशीलता को प्रमुखता दी गई है।

रवि वर्मा के इस तरह के कई लोकप्रिय चित्र हैं जिसमें "हरिश्चंद्र" *भीष्म की प्रतिज्ञा, हंस–दमयन्ती* आदि विख्यात हैं।

पाठगत प्रश्न (12.2)

सही शब्द चुनकर निम्नलिखित वाक्य पूरा करें।

1. राजा रवि वर्मा का जन्म
   (क) *कलाकार परिवार* में
   (ख) *राजवंश में*
   (ग) *दरिद्र परिवार* में हुआ था।
2. राजा रवि वर्मा ने
   (क) *जल रंग*
   (ख) *टेम्परा*
   (ग) *तैल रंग;* का प्रयोग किया है।
3. भारतीय चित्रकारों में तैल रंग का प्रयोग करनेवाले
   (क) *राजा राजा वर्मा*
   (ख) *अलागिरि नाईडू*
   (ग) *रवि वर्मा है।*
4. रवि वर्मा की लोकप्रियता के पीछे
   (क) *फोटोग्राफ*
   (ख) *ओलिओग्राफ*
   (ग) *लिथोग्राफ;* का योगदान है।

राधिका

12.3 बंगाल स्कूल

*कोलकाता के विख्यात ठाकुर परिवार के **अबनिन्द्रनाथ ठाकुर** ने भारतीय कला को एक नया रूप देने का प्रयास किया। ठाकुर परिवार के भवन के एक बारजे (Balcony) में अबनिन्द्रनाथ ने अपना स्टूडियो खोला और वहीं चित्रकला की चर्चा के साथ–साथ एक समकालीन कला आन्दोलन की शुरुआत की। इस आन्दोलन में उनके छात्रों नंदलाल बोस, शरदा उकील, असित कुमार, हलदर, चुगताई आदि ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और इस तरह से बंगाल स्कूल का जन्म हुआ। अबनिन्द्रनाथ के इन शिष्यों ने भारत के विभिन्न भागों में कला विद्यालयों के प्रमुखों के रूप में **बंगाल स्कूल शैली** को आगे बढ़ाया।*

अंग्रेजों द्वारा स्थापित किए गए मुम्बई, मद्रास, कोलकाता तथा लाहौर के कला विद्यालयों में पश्चिमी रीति में कला शिक्षा दी जाती थी जिसमें पश्चिमी रीति के जलरंग तथा तेल रंग तकनीक सिखाये जाते थे। कुछ समय के लिए अबनिन्द्रनाथ ने कोलकाता कला विद्यालय में शिक्षक के रूप में भी काम किया एवं भारतीय लघु चित्रकला सिखाने का प्रबंध किया। इसी तरह से युवा कला विद्यार्थियों में भारतीय शास्त्रीय कलारीति के प्रति रूचि बढ़ने लगी। इसमें कोई संदेह नहीं है कि बंगाल स्कूल स्वदेशी भावना के साथ गहरे रूप से संबंधित था।

बंगाल स्कूल की शैली की विशेषताएं उसकी विषय–वस्तु जैसे ऐतिहासिक चित्र, धार्मिक चित्र, साहित्यिक चित्र आदि में स्पष्ट होती है। बंगाल शैली की महत्त्वपूर्ण विशेषता चित्रों में रंग–योजना है जिसे "वाश" तकनीक नाम से जाना जाता है। इस तकनीक के कारण चित्र में अत्यंत मनोहारी रंग सामन्जस्य का दर्शन होता है।

बंगाल स्कूल समकालीन भारतीय कला को केवल कुछ समय तक ही प्रभावित कर सका, क्योंकि अगली पीढ़ी के अधिकतर युवा कलाकार समकालीन, सामाजिक तथा राजनैतिक हालात से प्रभावित होने लगे।

12.4 राधिका

शीर्षक	–	*राधिका*
माध्यम	–	*"वाश" तकनीक*
आकार	–	*14x21 सें.मी.*
शैली	–	*बंगाल स्कूल*
चित्रकार	–	*अबनिन्द्रनाथ ठाकुर*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय आधुनिक कला बीथि, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

बंगाल स्कूल के जन्मदाता अबनिन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म 7 अगस्त, सन् 1871 ई0 में हुआ। पश्चिमी रीति के साथ–साथ भारतीय पारंपरिक चित्र विधि में भी शिक्षा – प्राप्त अबनिन्द्रनाथ ने अपनी ही चित्रणविधि का आविष्कार किया, जिसे *'वाश'* तकनीक के नाम से जाना जाता है। उनके द्वारा बनाया गया *'राधिका'* चित्र इसी रीति में बनाया गया है। इस चित्र में अबनिन्द्रनाथ की चित्र–रीति की हर विशेषता स्पष्ट होती है। चित्र में प्रकाश की कोमलता एक रहस्यमय वातावरण की रचना करती है जहां *राधा* पानी भरने के लिए नदी की तरफ जा रही है। एक बंगालन की तरह *राधा* को दर्शाया गया है। *राधा* की देहाकृति को स्वाभाविक तथा बहुत ही नाजुक दर्शाया गया है। चित्र में विशिष्टता (हाईलाइट) आदि लाने के लिए *'टेम्परा तकनीक'* का प्रयोग किया गया है। अबनिन्द्रनाथ की इस तरह की चित्र–विधि को बंगाल स्कूल के कई चित्रकारों ने प्रयोग किया है। अबनिन्द्रनाथ की शैली में चीनी तथा जापानी लिपिकार तथा चित्रकारों का प्रभाव स्पष्ट है।

पाठगत प्रश्न (12.4)

रिक्त स्थान भरें –

1. बंगाल स्कूल के जन्मदाता हैं ....
2. अबनिन्द्रनाथ की अपनी चित्रणविधि ....तकनीक के नाम से जानी जाती है।
3. अबनिन्द्रनाथ की शैली में चीनी तथा .... का प्रभाव स्पष्ट है।

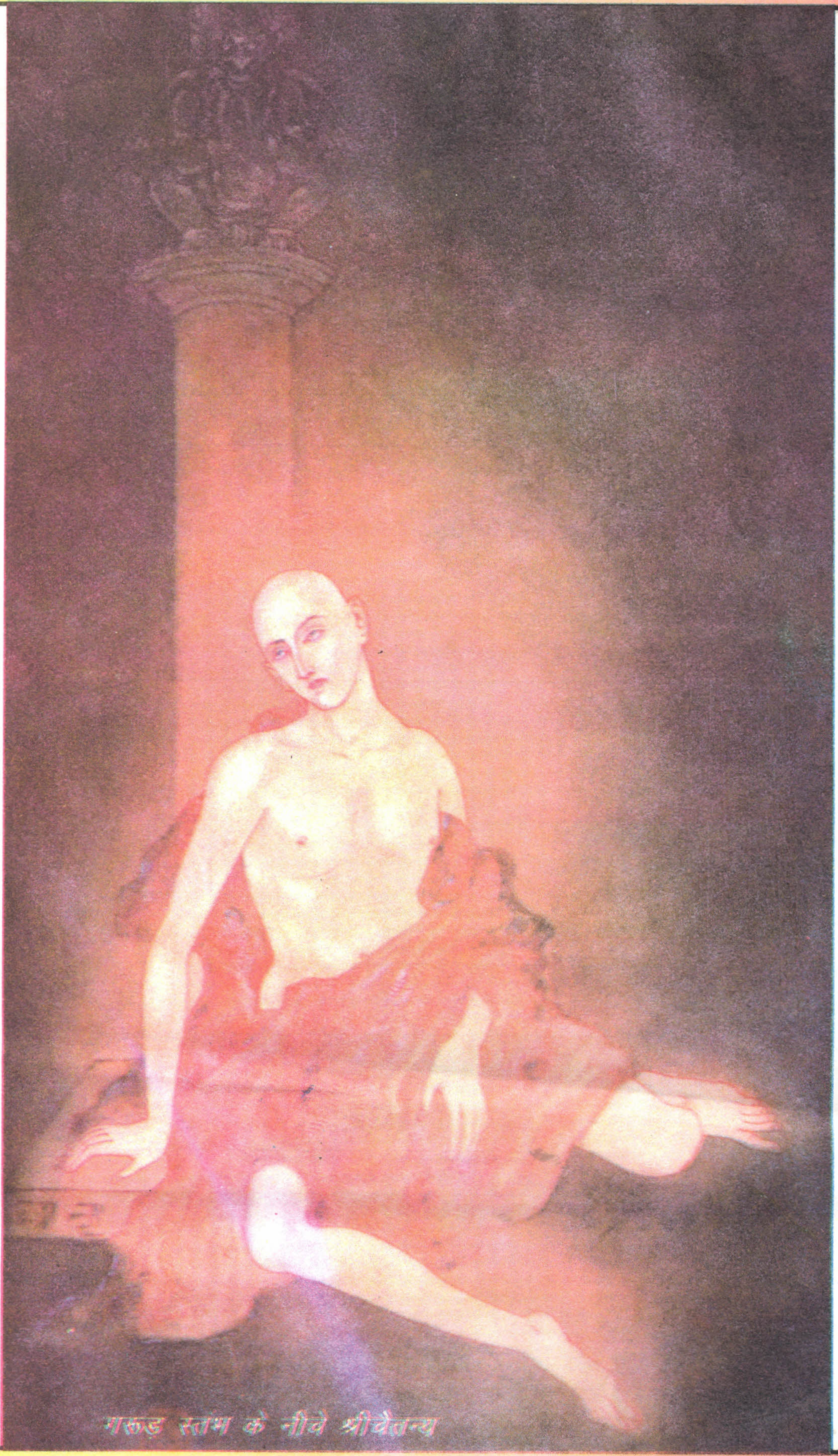

गरुड़ स्तंभ के नीचे श्रीचैतन्य

12.5 गरूड़ स्तम्भ के नीचे श्रीचैतन्य

शीर्षक	–	*गरूड़ स्तंभ के नीचे श्रीचैतन्य*
माध्यम	–	*'वाश' तथा टेंपरा तकनीक*
शैली	–	*बंगाल स्कूल*
आकार	–	*22.8X40 सें.मी.*
चित्रकार	–	*नन्दलाल बोस*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय आधुनिक कला बीथि, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

अबनिन्द्रनाथ के शिष्य **नंदलाल बोस** ने कोलकाता की 'सरकारी ललित कला तथा शिल्पकला विद्यालय' से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात अबनिन्द्रनाथ के पास कला शिक्षा पूर्ण की। अबनिन्द्रनाथ के चाचा विश्व कवि रबिन्द्रनाथ के शिक्षा प्रतिष्ठान विश्व भारती में वह कला भवन के अध्यक्ष नियुक्त हुए। 'गरूड़ स्तंभ' के नीचे *श्री चैतन्य* उनका विख्यात चित्र है। यह चित्र *'वाश'* तथा *'टेम्परा'* तकनीक से बनाया गया है। शोक में डूबे हुए *चैतन्य देव* को स्तंभ पर टेक लगाते हुए दर्शाया गया। वह दाएं हाथ पर अपने शरीर का सारा भार संभाले हुए हैं। शरीर का कुछ अंश वस्त्र से ढका हुआ है तथा अंगों की भंगिमा में शोक भाव प्रकट होता है। देहाकृति की रचना में नारी सुलभ कोमलता स्पष्ट है। स्तंभ के ऊपरी भाग में भगवान विष्णु को गरूड़ पर बैठे हुए दिखाया गया है। इस अंश से एक दैवीय प्रकाश आशीर्वाद के रूप में चैतन्य देव पर पड़ रहा है।

पाठगत प्रश्न (12.5)

ठीक उत्तर पर सही (√) चिन्ह लगाएं।

(1) कला विद्यालयों की स्थापना

(क) *ई.बी. हेबेल* (ख) *ब्रिटिश* (ग) *अबनिन्द्रनाथ* ने की थी।

(2) अबनिन्द्रनाथ ने

(क) *टेम्परा* (ख) *वाश'* (ग) *जल रंग* को विकसित किया।

(3) नन्दलाल बोस

(क) *ई.बी. हेबेल* (ख) *गगनेन्द्रनाथ,* (ग) *अबनिन्द्रनाथ* के शिष्य थे।

(4) अबनिन्द्रनाथ

(क) *चीनी तथा जापानी,* (ख) *दक्षिण तथा उत्तर कोरिया,*

(ग) *अंग्रेज चित्रकार तथा लिपिकार* द्वारा प्रभावित थे।

क्रुसीफिक्शन

12.6 क्रुसीफिक्शन

शीर्षक	–	*क्रुसीफिक्शन*
शैली	–	*लोक कला*
माध्यम	–	*टेम्परा*
आकार	–	*88.5x66.5 सें. मी.*
चित्रकार	–	*जामिनी राय*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय आधुनिक कला बीथि, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

बंगाल स्कूल शैली जब बहुत ही लोकप्रिय थी उस समय कुछ कलाकारों ने अपने व्यक्तिगत रीति में भी चित्र–रचना की। इनमें जामिनी राय प्रमुख थे। 1882 के अप्रैल महीने में जामिनी राय ने बंगाल के बांकुरा जिले के बालिआनोर गांव में जन्म लिया। सोलह वर्ष की आयु में वह कोलकाता के कला विद्यालय में कला शिक्षा लेने गये जहाँ उन्होंने पश्चिमी तकनीकों का अध्ययन किया, परंतु जामिनी राय ने न तो बंगाल स्कूल की रीति का और न पश्चिमी रीति का अपने चित्रों में प्रयोग किया, बल्कि वह प्रतिमा बनाने वाले कलाकारों की लोककला रीति का प्रयोग करने लगे। इन लोक कलाकारों की तरह उन्होंने खुद अपने रंग बनाकर चित्र बनाए। उदाहरणतः उन्होंने भूरे रंग के लिए मिट्टी, लाल रंग के लिए सिंदूर, नीले रंग के लिए नील पौधे का फूल तथा सफेद रंग के लिए चूने का प्रयोग किया। वह काले रंग के लिए काजल का प्रयोग करते थे। कैन्वस बनाने के लिए उन्होंने गाय के गोबर का प्रयोग किया। जामिनी राय ने अपने चित्रों के लिए हर तरह की विषय वस्तु का प्रयोग किया जिनमें देहाकृतियां ही मुख्य हैं। 'क्रुसीफिक्शन' एक ऐसा धार्मिक चित्र है जिसके लिए उन्होंने पारंपरिक टेम्परा तकनीक का प्रयोग किया है। चित्र की शैली काली घाट के पट–चित्र तथा बांकुरा के मिट्टी के खिलौनों द्वारा प्रभावित है। जामिनी राय ने बहुत ही सरल, सहज तथा संयमी रेखांकन का प्रयोग किया है। इस चित्र में ईसा मसीह को दर्शाया गया है एवं पश्चिमी रीति में बहुत ही सुंदर ढंग से भारतीयता का स्वरूप प्रदान किया गया है। इस चित्र में बाइजेन्टाइन शिल्प–रीति का प्रभाव स्पष्ट है। चित्र में तीन मुख्य देहाकृतियां है। बीच की ईसा मसीह की आकृति के दोनों ओर दो आकृतियों को गहरे रंग द्वारा प्रस्तुत किया गया है। पृष्ठभूमि में ईसा मसीह को श्रद्धा व्यक्त करते हुए उनके अनुयायियों की आकृतियां दर्शाई गई हैं। निःसंदेह यह चित्र करूण रस और एक गहरी व्यथा का एक उत्तम उदाहरण है।

पाठगत प्रश्न (12.6)

ठीक शब्द चुनकर निम्नलिखित वाक्य पूरा करें।

(1) जामिनी राय ने

(क) *प्राकृतिक रंग*

(ख) *अंग्रेजी रंग*

(ग) *वाश' रंग* का प्रयोग किया है।

(2) जामिनी राय का जन्म

(क) *अप्रैल 1882*

(ख) *जून 1838*

(ग) *जुलाई 1882* में हुआ था।

(3) जामिनी राय ने

(क) *टेम्परा*

(ख) *एक्रेलिक*

(ग) *तेल रंग* का प्रयोग किया है।

(4) 'क्रुसिफिक्शन' चित्र में

(क) *हर्ष*

(ख) *भयंकर रस*

(ग) *करूण रस* प्रकट है।

12.7 सारांश

भारतीय मुगल लघु चित्र के पतन के पश्चात चित्रकला का विकास बंद हो चुका था। अंग्रजों द्वारा प्रतिष्ठित कला विद्यालयों में पश्चिम प्रभावित रीति तथा विधि में कला शिक्षा दी जा रही थी। ऐसे परिदृश्य में दक्षिण भारत के त्रावणकोर राज्य में राजा रवि वर्मा पश्चिमी तैल चित्र तकनीक में भारतीय धार्मिक तथा पौराणिक विषय वस्तु पर चित्र बनाकर काफी लोकप्रिय हुए। दूसरी तरफ स्वदेशी आंदोलन के दौरान हर क्षेत्र में विदेशी प्रभाव को हटाने का प्रयास चल रहा था। बंगाल में अबनिन्द्रनाथ ठाकुर चित्रकला क्षेत्र में भारतीयता वापस लाने के प्रयास में एक नई शैली में चित्र बनाने लगे। इस शैली में 'वाश' तकनीक तथा विषय वस्तु के लिए पौराणिक

कहानियों आदि को प्रमुखता दी गई। कला इतिहास में इसे *बंगाल स्कूल* नाम से जाना जाता है।

नई–नई पश्चिमी कला रीतियां जैसे प्रभाववाद, अभिव्यंजनावाद आदि भारतीय युवा कलाकारों को प्रभावित करने लगे। ये कलाकार इन रीतियों से आकर्षित होकर समकालीन सामाजिक विषय–वस्तु के चित्र बनाने लगे। इसके साथ ही बंगाल स्कूल का प्रभाव समाप्त हो गया।

12.8 मॉडल प्रश्न

(1) भारतीय कलाकारों को ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा नियुक्त करने का उद्देश्य क्या था?

(2) रवि वर्मा की चित्रकला की विषय वस्तु बताइए।

(3) बंगाल स्कूल पर एक निबन्ध लिखिए।

(4) अबनिन्द्रनाथ के चित्र 'राधिका' पर टिप्पणी लिखिए।

(5) *'गरूड़ स्तंभ के नीचे श्रीचैतन्य'* चित्र का वर्णन कीजिए।

(6) जामिनी राय पर निबन्ध लिखिए।

(7) *'क्रूसिफिक्शन'* चित्र का वर्णन कीजिए।

12.9 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.2 1 (ख), 2 (ग), 3 (ग), 4 (ख)

12.4 (1) अबनिन्द्रनाथ, (2) वाश, (3) जापानी लिपिकार।

12.5 1 (ख), 2 (ख), 3 (ग), 4 (क)

12.6 1 (क), 2 (क), 3 (क) 4 (ग)

12.10 शब्दकोष

नवशास्त्रीय कला	– 18 वीं शताब्दी के अंतिम चरण में फ्राँसिसी चित्रकला में एक नई रीति आई थी जिसमें ग्रीक तथा रोमन शैली का प्रभाव दिखाई देता है।
ओलिओग्राफ	– छापने की एक तकनीक जिसमें पत्थर पर चित्र बनाकर छापा जाता है।
वाश तकनीक	– कागज पर रंग लेपने के पश्चात पानी से बार बार धोना तथा फिर लेपना और धोने की प्रक्रिया से कोमल वर्ण प्राप्त होता है।
वाईज़ेनटाईन	– मध्य एशिया के इस स्थान पर जिस कला का विकास हुआ था उस कला शैली का नाम है।
प्रभाववाद	– 19 वीं शताब्दी में कई चित्रकार जैसे मोने, माने देगा आदि ने इस शैली में चित्र बनाये।
अभिव्यंजनावाद	– 20वीं शताब्दी में इस शैली का विकास हुआ। मन्दीया कैन्डीनस्की आदि इस अमूर्त कला के प्रमुख चित्रकार हैं।